

कें रे अ प्र सं, मैसूरु में दि 22 व 23 मार्च 2024 को संपन्न अनुसंधान सलाहकार समिति
की 51 वीं बैठक के कार्यवृत्त

कें रे अ प्र सं, मैसूरु एवं संबद्ध एककों में सितंबर 2023 से फरवरी 2024 तक की अवधि के दौरान समाप्त परियोजनाओं, चालू एवं नए परियोजना प्रस्तावों, विस्तारण एवं प्रशिक्षण कार्यकलापों की समीक्षा करने के लिए अनुसंधान सलाहकार समिति की 51 वीं बैठक दि 22 व 23 मार्च 2024 को संस्थान में आयोजित की गई। प्रोफेसर महादेव बी शेटी, अध्यक्ष, असस, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश व पूर्व कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यूएसडी), धारवाड़ ने पुनर्गठित समिति सदस्यों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। प्रतिभागियों की सूची अनुबंध-1 के रूप में संलग्न है।

कें रे अ प्र सं, मैसूरु के निदेशक डॉ. एस. गांधी दास ने असस की पुनर्गठित समिति के अध्यक्ष और सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने मुख्य संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों के प्रमुखों, वैज्ञानिकों, जेआरएफ, एसआरएफ, पीए और आरएसआरएस, आरईसी, एसएसबीएस, कुनूर और पी4, हासन के सभी वैज्ञानिकों को भी बैठक में स्वागत किया।

अध्यक्ष महोदय ने एक बार फिर सभी सदस्यों, सीएसआरटीआई, मैसूरु के वैज्ञानिकों का बैठक में स्वागत किया और सदस्यों से अपना परिचय देने का अनुरोध किया। उन्होंने दूसरे कार्यकाल के लिए पुनर्गठित आरएसी के अध्यक्ष के रूप में उन्हें नामित करने के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड को धन्यवाद दिया और आरएसी के सभी सदस्यों को बधाई दी। इसके अलावा, उन्होंने वैज्ञानिकों को रेशम उत्पादन में कठिन श्रम को कम करने हेतु कृषि मशीनीकरण में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करने और क्षेत्र समस्याओं पर आधारित परियोजनाएं प्रस्तावित करने की सलाह दी। उन्होंने रेशम उत्पादन प्रौद्योगिकियों को क्षेत्र में स्थानांतरित करने के लिए विस्तार तंत्र को मजबूत करने की भी सलाह दी।

1. कें रे अ प्र सं, मैसूरु एवं संबद्ध एककों के सितंबर 2023 से फरवरी 2024 तक की अवधि के अनुसंधान व विकास के मुख्यांश

डॉ. एस. गांधी दास ने सितंबर 2023 से फरवरी 2024 तक की अवधि के दौरान संस्थान एवं संबद्ध एककों में हुए अनुसंधान व विकास के मुख्यांश प्रस्तुत किए। समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों ने प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और उच्च प्रभाव कारक /नास रेटिंग वाले जर्नलों में शोध पत्र प्रकाशित करने की

सराहना की। अध्यक्ष ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान नव नियुक्त वैज्ञानिकों के लिए फाउंडेशन प्रशिक्षण, विदेशी प्रशिक्षणार्थियों के लिए आईटीईसी प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करने की सराहना की।

2.11 व 12 सितंबर 2023 को आयोजित 50वीं असस की बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि

अनुसंधान सलाहकार समिति ने 50वीं आरएसी बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की जैसाकि किसी भी सदस्य से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई।

3.50वीं आरएसी बैठक के निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा

पिछली बैठक के प्रमुख निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई डॉ. एस. बालासरस्वती, वैज्ञानिक-डी व प्रमुख, पीएमसीई द्वारा प्रस्तुत की गई। समिति ने अनुवर्ती कार्रवाई पर संतुष्टि व्यक्त की।

4. समाप्त परियोजनाओं की समीक्षा

1. पीआईबी 3632: विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों में उपज और अनुकूलन क्षमता के लिए बेहतर त्रिगुणित जीनोटाइपों का मूल्यांकन

निर्णय: एम.के. रघुनाथ, वैज्ञानिक -डी ने समाप्त परियोजना के परिणाम प्रस्तुत किए और पत्ती में नमी की मात्रा, नमी धारण क्षमता और हरित कण दर्ज करने के लिए उपयोग की गई विधियों को स्पष्ट किया। समिति ने निष्कर्षित रिपोर्ट को आरएमआईएस 10 प्रारूप में प्रस्तुत करने की सलाह दी और चयनित त्रिगुणित जीनोटाइप, ट्राई-8 और ट्राई-9 का एआईसीईएम में मूल्यांकन करने का सुझाव दिया। समिति ने पहाड़ी क्षेत्रों में चयनित जीनोटाइप, ट्राई-8 और ट्राई-9 का परीक्षण करने की सलाह दी।

(कार्रवाई: एम.के.रघुनाथ, वैज्ञानिक-डी, एमबीजी)

2. एमओई 01021 एसआई: दक्षिण भारत के शहतूत क्षेत्रों के लिए विकसित उन्नत प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन और लोकप्रियकरण। घटक 9: शहतूत उत्पादकता में ड्रिप फर्टिगेशन का प्रभाव (ओएसटी)

निर्णय: आर. महेश, वैज्ञानिक-सी ने समाप्त परियोजना के परिणाम प्रस्तुत किए और समिति ने परियोजना में प्रयुक्त उर्वरकों की विभिन्न खुराक और प्रौद्योगिकी के तकनीकी लेखा जोखा को स्पष्ट किया। इसके अलावा, समिति ने निष्कर्षित रिपोर्ट में पत्ती उपज आंकड़ा की सीमा और ड्रिप फर्टिगेशन प्रणाली के लेआउट को शामिल करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: आर. महेश, वैज्ञानिक सी, कृषि विज्ञान)

3. AIC01023SI रेशमकीट, बॉम्बेक्स मोरी में कीटनाशक प्रतिरोधी बायोमार्कर के लिए स्पेक्ट्रोस्कोपिक जांच विकसित करना

निर्णय: सतीश एल, वैज्ञानिक सी ने समाप्त परियोजना के परिणाम प्रस्तुत किए और समिति ने कीटनाशकों का पता लगाने के लिए पेपर स्ट्रिप विधि में अपनाई गई पद्धति को स्पष्ट किया। समिति ने पीपीएम के स्थान पर $\mu\text{g/ml}$ शब्द का उपयोग करने की सलाह दी। इसके अलावा मिट्टी में कीटनाशक अवशेषों को निकालने के लिए एंटीडोट्स के विकास सहित अनुवर्ती परियोजनाएं लेने का सुझाव दिया गया।

(कार्रवाई: सतीश एल, वैज्ञानिक -सी रेरोवि)

5. अनुमोदन हेतु नई परियोजनाएँ

1. एसआरई 01039 एमआईसी: शहतूत रेशमकीट, बॉम्बेक्स मोरी के प्यूपा में कीटनाशक अवशेषों का मानचित्रण

निर्णय: वाई. थिरुपथैया, विज्ञान-सी ने निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ नई परियोजना का विवरण प्रस्तुत किया। चूंकि वर्तमान परियोजना और बीपीएस 01041 एसजीसी में मानव और पशु उपभोग स्रोत के रूप में प्यूपा हैं, इसलिए फीड फॉर्मूलेशन में कीटनाशकों के स्तर का

परीक्षण करना भी आवश्यक है और इसलिए दो परियोजनाओं को संयोजित करने की आवश्यकता है। समिति के सदस्यों द्वारा इसकी आलोचनात्मक समीक्षा की गई और सुझावों को शामिल करने और अगली आरएसी में स्पष्ट उद्देश्यों और कार्य योजना के साथ एक परियोजना के रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया गया।

(कार्रवाई: वाई. तिरुपतय्या, वैज्ञानिक -सी, रेशवि)

2. बीपीएस 01041 एसजीसी: ब्रॉयलर और लेयर चिकन में रेशमकीट (बॉम्बिक्स मोरी) प्यूपा आहार एवं पोषक तत्वों का मूल्यांकन और मान्यकरण

निर्णय: वाई. तिरुपतय्या, वैज्ञानिक -सी ने निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ नई परियोजना का विवरण प्रस्तुत किया। समिति के सदस्यों द्वारा इसकी आलोचनात्मक समीक्षा की गई और सुझावों को शामिल करने और स्पष्ट उद्देश्यों और कार्य योजना के साथ एक परियोजना के रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया गया। समिति ने अभिव्यक्त किया कि परियोजना के तहत उपकरण सीएसआरटीआई, मैसूर द्वारा खरीदे जाने चाहिए।

3. एसआईबी 01040 एसआईसी: बेहतर फसल स्थिरता और रेशम की गुणवत्ता के लिए सीएसआर2 (पीएमएक्ससीएसआर2) के बदले शुद्ध मैसूर के लिए एक नया नर घटक की पहचान

निर्णय: शिवकुमार, वैज्ञानिक ने निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ नई परियोजना का विवरण प्रस्तुत किया। समिति ने प्रयोग में पहले से विकसित रेशमकीट नस्लों अर्थात् सीएसआर6 और सीएसआर26 को शामिल करने का सुझाव दिया। डेटा विश्लेषण के लिए उचित सांख्यिकीय तरीकों का पालन किया जाना आवश्यक है। इसके अलावा, समिति ने परियोजना में एफसी1 और एफसी2 के जनकों को भी शामिल करने की सलाह दी।

(कार्रवाई: डॉ.शिवकुमार, वैज्ञानिक-सी , शप्रप्र)

4. दक्षिण भारत में शहतूत रेशम उत्पादन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली का मूल्यांकन

निर्णय: सतीश कुलकर्णी, वैज्ञानिक -डी ने निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ नई परियोजना का विवरण प्रस्तुत किया। शीर्षक, कार्यप्रणाली, कार्य योजना और नमूना आकार को संशोधित करना आवश्यक है। इसके अलावा, समिति ने शहतूत रेशम उत्पादन को एक घटक के रूप में जोड़ने तथा रेशम उत्पादन को माँड्यूल के रूप में आईएफएस स्वीकृत किसानों में इसका मूल्यांकन करने का सुझाव दिया। समिति ने कहा कि उपर्युक्त सुझावों को शामिल करके संशोधित परियोजना प्रस्ताव को पुनः प्रस्तुत करें।

(कार्रवाई: सतीश कुलकर्णी, वैज्ञानिक -डी, आरएसआरएस कोडती)

5. चालू परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा

1. पीआईई 13001 एमआई: अखिल भारतीय शहतूत समन्वित प्रायोगिक परीक्षण (एआईसीईएम) - चरण- IV

निर्णय: मंजप्पा, वैज्ञानिक -सी ने परियोजना की प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने अगले आरएसी में मौसम वार डेटा प्रस्तुत करने की सलाह दी।

(कार्रवाई: मंजप्पा, वैज्ञानिक -सी, शप्रआ)

2. पीआईई 01022 एसआई: प्राथमिक उपज परीक्षण में उच्च पत्ती उपज और मूल विगलन और मूल गाँठ रोगों के प्रतिरोध के लिए आशाजनक शहतूत जीनोटाइपों का मूल्यांकन

निर्णय: मंजप्पा, वैज्ञानिक -सी ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति नोट किया और बिना किसी अतिरिक्त बजट के प्रभावी क्षेत्रों में जीनोटाइप का मूल्यांकन करने पर सहमति व्यक्त की और निर्धारित समय में काम पूरा करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: मंजप्पा, वैज्ञानिक -सी, शप्रआ)

3. पीआईई 01036 एसआई: इष्टतम और उप-इष्टतम निवेश स्थितियों के तहत पत्ती उपज के लिए शहतूत जीनोटाइप का अंतिम उपज मूल्यांकन

निर्णय: तन्मय सरकार वैज्ञानिक -सी ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति ने प्रगति पर ध्यान दिया और शीर्षक को संशोधित किया कि "सीमित सिंचाई और उर्वरक स्थितियों के तहत पत्ती उपज के लिए शहतूत जीनोटाइप का अंतिम उपज मूल्यांकन"। समिति ने उद्देश्यों को इस प्रकार संशोधित किया (1) "विभिन्न सिंचाई (100% और 60%) और उर्वरक (100% और 60% उर्वरक की अनुशंसित खुराक) स्थितियों के तहत पत्ती उपज और विशेषताओं के लिए शहतूत जीनोटाइपों का मूल्यांकन" (2) "पत्ती गुणवत्ता मापदंडों के लिए विभिन्न सिंचाई (100% और 60%) और उर्वरक (100% और 60% उर्वरक की अनुशंसित खुराक) स्थितियों के तहत में शहतूत जीनोटाइपों का मूल्यांकन" । समिति ने दोनों स्थितियों के लिए एक ही प्रकार का अंतर रखने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: तन्मय सरकार, वैज्ञानिक -सी, शप्रअ)

4. पीआईपी 01037 एसआई: शरीरक्रियात्मक दक्षता के लिए आशाजनक शहतूत जीनोटाइप की पहचान और उप-इष्टतम परिस्थितियों में उपज और गुणवत्ता के साथ उनका संबंध।

निर्णय: गायत्री टी, वैज्ञानिक -सी ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया और परियोजना के शीर्षक को संशोधित करके "शरीरक्रियात्मक दक्षता के लिए आशाजनक शहतूत जीनोटाइप की पहचान और सीमित सिंचाई और उर्वरक के तहत उपज और गुणवत्ता के साथ उनका संबंध" और उद्देश्य को "सीमित सिंचाई (60% सिंचाई) और उर्वरक (उर्वरक की 60% अनुशंसित खुराक) स्थितियों के अधीन शहतूत में उच्च उपज और गुणवत्ता के लिए चयनित जीनोटाइप का मूल्यांकन" रखने का सुझाव दिया। इसके अलावा, समिति ने सीमित सिंचाई और उर्वरक स्थितियों के तहत जीनोटाइप के निष्पादन की तुलना करने के लिए क्षेत्र प्रयोग को शामिल करने तथा नियंत्रण के रूप में 100% सिंचाई और उर्वरक के तहत चयनित जीनोटाइप का मूल्यांकन करने की सलाह दी और तदनुसार प्रयोगात्मक लेआउट को संशोधित करने का सुझाव दिया। मानक उपजाति AGB8 को CMY01 के रूप में प्रस्तुत करने का भी सुझाव दिया गया है।

(कार्रवाई: टी.गायत्री वैज्ञानिक -सी, शशवि)

5. MTL01025MI-शहतूत रेशम का जीवन चक्र मूल्यांकन: एक राष्ट्रीय मूल्यांकन

निर्णय: अमित कुमार, वैज्ञानिक -डी, ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति ने प्रगति को नोट किया और सलाह दी कि समीक्षा समिति के सदस्यों के साथ विशेषज्ञ समिति की समीक्षा बैठक आयोजित करें।

(कार्रवाई: अमित कुमार, वैज्ञानिक -डी, मृदाविर)

6. PPA01034 SI: उच्च शहतूत उत्पादकता के लिए अनुकूलित उर्वरक का विकास

निर्णय: आर. महेश, वैज्ञानिक -सी ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति ने प्रगति को नोट किया और पद्धति में उपचार को संशोधित करने की सलाह दी। इसके अलावा अध्यक्ष ने मृदा रसायन विज्ञान विशेषज्ञों के साथ आगे के अनुसमर्थन के लिए उपचार विवरण साझा करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: आर.महेश, वैज्ञानिक -सी , कृषि विज्ञान)

7. PPA01035SI: स्थिरता के लिए शहतूत में प्राकृतिक खेती पर अध्ययन

निर्णय: सी.एम. बाबू, वैज्ञानिक -डी, ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: सी.एम. बाबू, वैज्ञानिक -डी, कृषि विज्ञान)

8. ARE01029MI: शहतूत के लिए नवीन कवकनाशी और कीटनाशक अनुप्रयोगों की सिफारिशें

निर्णय: एस. महिबा हेलेन, वैज्ञानिक -डी, ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने परियोजना की प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: एस. महिबा हेलेन, वैज्ञानिक -डी, पीप्रप्र)

9. PRE 01030 सीएन: शहतूत में ब्रॉड माइट, पॉलीफागोटासॉनेमस लैटस (अकारी: टासॉनेमिडे) के लिए एक एकीकृत प्रबंधन प्रणाली का विकास

निर्णय: एस. महिबा हेलेन, वैज्ञानिक -डी, ने प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने व्यापक घुन को नियंत्रित करने में हिर्सुटेला थॉम्पसोनी की प्रभावकारिता को साबित करने के लिए दूसरा परीक्षण करने की सलाह दी क्योंकि कॅरेअप्रसं, मैसूरु में किए गए पहले परीक्षण में यह घुन के संक्रमण को नियंत्रित करने में विफल रहा । इस संबंध में, सलाह दी गई कि एनबीएआईआर में किए जा रहे विष विज्ञान अध्ययन को कुछ समय के लिए रोकने के लिए तुरंत पीआई, आईसीएआर-एनबीएआईआर को एक पत्र भेजा जाना चाहिए। इसके अलावा, समिति ने एच. थॉम्पसोनिथै के विष विज्ञान डेटा को इस शर्त के तहत लेने की सलाह दी कि शहतूत में घुन के संक्रमण को नियंत्रित करने में एच. थॉम्पसोनी की प्रभावकारिता साबित हो।

(कार्रवाई: एस. महिबा हेलेन, वैज्ञानिक -डी, पीप्रप्र)

10. ARP-01033CN: भारत के दक्षिणी राज्यों में शहतूत रेशमकीट रोग की निगरानी और प्रबंधन।

निर्णय: मल्लिकार्जुन जी, -सी, ने प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: मल्लिकार्जुन जी, वैज्ञानिक -डी,रेरोवि)

11. रेशमकीट पालन अपशिष्ट से बायोरिफाइनेरीज के उत्पादन की प्रक्रिया का विकास

निर्णय: वाई. तिरुपतैय्या, वैज्ञानिक -सी, ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने अध्ययन की प्रगति को नोट किया और अध्ययन के शीर्षक को "शहतूत प्ररोह से बायोएथेनॉल उत्पादन" के रूप में संशोधित करने का सुझाव दिया और समय पर अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करने की सलाह दी।

(कार्रवाई: वाई., तिरुपतैय्या, वैज्ञानिक-सी,रेशवि)

12. एआईबी01024 एमआई: अंडावस्था में बॉम्बेक्स मोरी एल की उत्पादक, ऑटो सेक्सिंग रेशमकीट नस्लों/संकरों का विकास और वाणिज्यिक उपयोग के लिए ऑप्टिकल सॉर्टिंग विधि द्वारा नर रेशमकीटों को अलग करना।

निर्णय: कुसुमा, -सी, वैज्ञानिक ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने अंडा छँटाई मशीन के लिए एक पेटेंट दाखिल करने और 2-3 रेशमकीट फसलों में इसका मूल्यांकन/सत्यापन करने के बाद प्रौद्योगिकी का व्यावसायीकरण करने का सुझाव दिया। समिति ने आवश्यकता के आधार पर परियोजना को दिसंबर, 2024 तक बढ़ाने की सिफारिश की।

(कार्रवाई: कुसुमा एल, वैज्ञानिक -सी, द्विप्रप्र)

13. AIE01026MI: व्यावसायिक उपयोग हेतु प्राधिकरण के लिए किसानों के स्तर पर नए द्विप्रज द्वि संकर BFC1xBFC10 का मूल्यांकन

निर्णय: के.बी. चन्द्रशेखर, वैज्ञानिक -डी, ने परियोजना की प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने परियोजना की प्रगति को नोट किया। इसके अलावा, समिति ने पी। स्तर पर स्थिरता सुनिश्चित करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: के.बी. चन्द्रशेखर, वैज्ञानिक -डी, द्विप्रप्र)

14. एआईबी 01032 एसआई: रेशम नियामकों का सत्यापन - रेशमकीट नस्लों के बीच यूबिकिटिन और मैनोसिडेज़

निर्णय: कुसुमा एल, सी, ने परियोजना की प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: कुसुमा एल, वैज्ञानिक -सी, द्विप्रप्र)

15. पीएस 01027 सीएन: बॉम्बेक्स मोरी से निकाले गए काइटोसिन नैनोकणों के प्रतिरक्षा नियंत्रण और सहायक प्रभाव

निर्णय: मधुसूदन के.एन., वैज्ञानिक -डी, ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: मधुसूदन के.एन., वैज्ञानिक -डी, द्विप्रप्र)

16.पीएस 010028 सीएन: उन्नत पैकेजिंग अनुप्रयोगों के लिए रेशम उत्पादन अपशिष्ट से पृथक किए गए सेलूलोज और काइटिन का मूल्य संवर्धन

निर्णय: मधुसूदन के.एन., वैज्ञानिक -डी, ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

17. एसआईबी 01038 एमजीसी: उत्पादक द्विप्रज संकर के विकास के लिए जापानी रेशमकीट नुवंशिक संसाधनों का उपयोग (एनएआरओ-जापान, सीएसआरटीआई-बेरहामपुर, पंपोर और एसबीआरएल-बेंगलुरु के सहयोग से)

निर्णय: चंद्रकांत एन. वैज्ञानिक सी ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया। इसके अलावा, प्रजनन वंशों में एनपीवी और उच्च तापमान और आर्द्रता सहनशीलता का आकलन करने का सुझाव दिया गया ।

(कार्रवाई: चंद्रकांत एन. वैज्ञानिक -सी, द्विप्रप्र)

18. MOE01031CN नवसारी जिले (गुजरात) में द्विप्रज शहतूत रेशम उत्पादन के कीटपालन निष्पादन का प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और मूल्यांकन

निर्णय: जाधव अशोक लिम्बाजी, वैज्ञानिक -सी, ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने आलोचनात्मक समीक्षा की कि परियोजना में कोई महत्वपूर्ण प्रगति नहीं हुई है। समिति ने सीएसआरटीआई, मैसूर के निदेशक को परियोजना के पीआई, सीआई और गुजरात राज्य के नोडल अधिकारी एवं एमडी (आरएसएफएफ) के साथ परियोजना स्थल का दौरा करने और परियोजना के तहत सभी निर्धारित लक्ष्यों को परियोजना अवधि के अंदर प्राप्त करने के लिए कीटपालन गृह के निर्माण पर चर्चा करने की भी सलाह दी।

(कार्रवाई: जाधव अशोक लिम्बाजी वैज्ञानिक -सी, आरईसी परभणी)

19. एआईबी 01009 एमआई: प्राधिकरण और वाणिज्यिक उपयोग के लिए किसानों के स्तर पर नए द्विप्रज रेशमकीट द्विसंकर टीटी21xटीटी56 का मूल्यांकन

निर्णय: मधुसूदन के.एन., वैज्ञानिक --डी ने परियोजना की प्रगति प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया और परियोजना अवधि समाप्त होने के एक महीने के भीतर समाप्त परियोजना प्रस्तुत करने की सलाह दी।

(कार्रवाई: मधुसूदन के.एन., वैज्ञानिक -डी, बीबीएल)

मद संख्या 7: आरएसआरएस और एसएसबीएस, कून्नूर की प्रगति

आरएसआरएस, सेलम

दाहिरा बीवी, वैज्ञानिक -डी, ने परियोजनाओं की प्रगति, सीबीटी, ईसीपी, आदि की गतिविधियां प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

आरएसआरएस, कोडती

वी. लक्ष्मणन, वैज्ञानिक -डी, ने परियोजनाओं की प्रगति, सीबीटी, ईसीपी और सीपीपी की गतिविधियां प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति को नोट किया।

(कार्रवाई: वी. लक्ष्मण, वैज्ञानिक -डी , आरएसआरएस कोडती)

आरएसआरएस, अनंतपुर

के.पी. किरण कुमार, वैज्ञानिक -डी, ने सीबीटी, ईसीपी और सीपीपी गतिविधियों की गतिविधियां प्रस्तुत किया और समिति ने प्रगति नोट किया।

(कार्रवाई: श्री.श्रीनाथ, वैज्ञानिक -डी , आरएसआरएस, अनंतपुर)

आरएसआरएस, मुलुगु

विनोद कुमार यादव, वैज्ञानिक-सी सीबीटी, ईसीपी और सीपीपी गतिविधियों की गतिविधियां प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति नोट किया।

(कार्रवाई: विनोद कुमार यादव, वैज्ञानिक -सी , आरएसआरएस, मुलुगु)

पी4 हसन

दयानंद, वैज्ञानिक डी ने केंद्र की गतिविधियां प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति का अवलोकन किया।

(कार्रवाई: दयानंद, वैज्ञानिक -डी, पी4 हसन)

एसएसबीएस कूनूर

वी. विजय, वैज्ञानिक -सी, ने केंद्र की गतिविधियां प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति का अवलोकन किया। समिति ने परिसर की फेंसिंग के काम में तेजी लाने की सलाह दी।

(कार्रवाई: वी.विजय, वैज्ञानिक -सी, एसएसबीएस कूनूर)

आरएसआरएस, चामराजनगर

एल.सतीश, वैज्ञानिक -सी, ने केंद्र की गतिविधियां और जनशक्ति के अभाव में केंद्र को चलाने में आने वाली समस्याओं का जिक्र किया और समिति ने आरसीएस को नियमित गतिविधियां संचालित करने हेतु वैज्ञानिक/कर्मचारियों को तैनात करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: सतीश एल, वैज्ञानिक -सी, आरएसआरएस चामराजनगर)

मद सं 8. विस्तार और अन्य कार्यक्रम

आर. भाग्या, वैज्ञानिक -डी, सीम ने विस्तार प्रभाग की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति नोट किया और राज्यवार प्रस्तुत करने की सलाह दी नए वृक्षारोपण पर डेटा भविष्य की प्रस्तुति में लिया जाएगा।

(कार्रवाई: वैज्ञानिक-डी व प्रमुख, एसईईएम)

मद संख्या 9. प्रशिक्षण (क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण) एवं अन्य कार्यक्रम

आर. मीनल, वैज्ञानिक -डी, ने प्रशिक्षण प्रभाग की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति ने प्रगति नोट किया।

(कार्रवाई: वैज्ञानिक -डी और प्रमुख, वैज्ञानिक -डी, प्रशिक्षण प्रभाग)

मद सं 11. चर्चा के लिए कोई अन्य बिंदु

मद संख्या 12: समिति सदस्यों द्वारा निष्कर्ष

डॉ. सेंटिल कुमारन. जी, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-आईआईएचआर

- आविष्कार किए गए उपकरणों के लिए पेटेंटिंग और डिज़ाइन का पंजीकरण किया जाना आवश्यक है।
- वैज्ञानिकों को सलाह दी गई कि वे मोबाइल कैमरे से ली गई तस्वीरों के बजाय डीएसएलआर कैमरे से ली गई हाई रेजोल्यूशन वाली तस्वीरों का उपयोग करें।
- रेशम उत्पादन में सेंसर आधारित प्रौद्योगिकियों, मशीनीकरण और स्वचालन का उपयोग करके सटीक खेती पर परियोजनाएं प्रस्तावित करने की आवश्यकता है।

डॉ. अश्वत्थ, वैज्ञानिक -डी (सेवानिवृत्त), केंरेअप्रसं, मैसूरु

- उन्होंने सुझाव दिया कि इस संस्थान में रेशम उत्पादन इंजीनियरिंग प्रभाग के लिए कृषि इंजीनियरिंग में विशेषज्ञ वैज्ञानिक होना चाहिए।
- सदस्य की टिप्पणियाँ पहले से ही व्यक्तिगत रेशमकीट प्रजनन परियोजनाओं में शामिल की गई हैं।

डॉ विजयन. के, वैज्ञानिक डी (सेवानिवृत्त), केंरेबो

- उन्होंने समाप्त परियोजनाओं के परिणाम की सराहना की यथा फर्टिगेशन, शहतूत की पत्ती और कोसा उत्पादकता में वृद्धि और कीटनाशक अवशेषों का पता लगाना।
- शहतूत में एकीकृत कृषि प्रणाली पर परियोजना शीघ्र ही शुरू करने की आवश्यकता है।
- नई परियोजनाओं के अंतर्गत यथार्थवादी बजटीय प्रावधान प्रस्तावित किया जाना चाहिए।
- प्रस्तुतीकरण में परियोजना के परिणाम/उपलब्धि को दर्शाने वाली विशिष्ट जानकारी होनी चाहिए।
- परियोजनाएं क्षेत्रीय समस्याओं के आधार पर तैयार की जानी चाहिए।

आरएसआरएस/आरईसी में वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारियों की कमी को जल्द से जल्द दूर करने की जरूरत है।

डॉ. सीतारामुलु, निदेशक, एपीएसएसआरडीआई

- उन्होंने अभिव्यक्त किया कि संस्थान में रेशमकीट नस्लों को बनाए रखने की जरूरत है।

डॉ. एम. लक्ष्मीनारायण, प्रोफेसर, यूएस, बेंगलुरु

- सामाजिक विज्ञान पर परियोजनाएं यथा मूल्य शृंखला, टीओटी पर प्रभाव, रेशम उत्पादन गतिविधि में लिंग विशिष्ट योगदान।
- उन्होंने कठिन परिश्रम को कम करने के लिए आईसीटी उपकरण, मशीनीकरण पर परियोजनाएं शुरू करने की भी सलाह दी।
- हितधारकों के बीच प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए सफलता की कहानियों को प्रलेखित करने की आवश्यकता है।

डॉ. शिशुपाल एस, प्रोफेसर, दावणगेरे विश्वविद्यालय

- उन्होंने जैव-कीटनाशकों के प्रभाव की जांच के लिए रेशमकीट को एक मॉडल कीट के रूप में उपयोग करने की सलाह दी।
- कीटनाशकों का पता लगाने के लिए पेपर स्ट्रिप विधि का व्यावसायीकरण करने की आवश्यकता है।

डॉ. के. झाँसीलक्ष्मी, वैज्ञानिक -डी , आरसीएस

सीएसबी एपीपी आधारित, प्रक्रिया और उत्पाद विशिष्ट परियोजनाओं और उत्पाद विविधीकरण परियोजनाओं को प्रोत्साहन दे रहा है।

- उन्होंने बताया कि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए सीबीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत फोटोग्राफी पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तावित किया गया है।

निदेशक, केंरेबो-केंरेअप्रसं, मैसूर

आरएसी द्वारा मध्यावधि में सुझाए अनुसार संशोधन करने पर अधिक सटीक डेटा तैयार करने में मदद मिलेगी।

- संस्थान में बृहत भवन नवीकरण कार्य किया जाएगा ।
- उन्होंने सदन को बताया कि 2024-25 की तीसरी या चौथी तिमाही के दौरान एक इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा और राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया जाएगा।

डीओएस, तेलंगाना

- वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारियों के साथ तेलंगाना में सीएसबी इकाई को मजबूत करने का अनुरोध किया गया।

डीओएस, कर्नाटक

- उन्होंने शहतूत के बगीचे में कीटों के संक्रमण से निपटने के लिए प्रौद्योगिकियों और रेशमकीटों के गैर-कताई प्रबंधन के लिए एहतियाती उपाय अपनाने को कहा।

डीओएस, महाराष्ट्र

- उन्होंने औरंगाबाद/बारामती में नई आरएसआरएस इकाई खोलने का अनुरोध किया।
- उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि महाराष्ट्र के किसानों को अनाज और कोसोत्तर गतिविधियों पर प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

डीओएस, तमिलनाडु

- उन्होंने शहतूत में घुन/थ्रिप्स संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए जैव-नियंत्रण कारकों की आपूर्ति के लिए अनुरोध किया।
- उन्होंने सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, जड़ सड़न के लिए सुधारात्मक उपायों के लिए प्रौद्योगिकियों का भी अनुरोध किया।

प्रोफेसर महादेव.बी.शेट्टी, उप कुलपति, संस्कृति विश्वविद्यालय

- उन्होंने ऊष्मायन केंद्र की स्थापना करने तथा संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एक संगोष्ठी आयोजित करने के प्रस्ताव पर संतुष्टि जताई।
- बैठक के दौरान संयुक्त सचिव, कृषि सहकारिता विभाग, तेलंगाना की उपस्थिति हेतु संतोष व्यक्त किया।
- उन्होंने अभिव्यक्त किया कि स्लाइडों की संख्या दस से अधिक न हो और न्यूनतम फोन्ट आकार 24 रखें और प्रस्तुतीकरण में परियोजना का परिणाम स्पष्ट होना चाहिए।
- उन्होंने अभिव्यक्त किया कि शहतूत पत्ती गुणवत्ता एवं उत्पादकता में पादप वृद्धि नियामकों के प्रभाव का विश्लेषण करने की परियोजनाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए।

- संस्थान के लिए शहतूत पत्ती आर्द्रता मापने हेतु पत्ती आर्द्रता मीटर होना चाहिए और शुद्ध वजन के आधार पर पत्ती हरित कण मापा जाए ।
- रेशम उत्पादन में यंत्रीकरण और स्वचालन पर अनुसंधान करने हेतु कृषि इंजीनियरिंग पर विशेषता रखने वाले वैज्ञानिक होना चाहिए ।
- उन्होंने क्षेत्र समस्याओं के आधार पर परियोजनाएं लेने का सुझाव दिया ।
- उन्होंने प्रधान अन्वेषकों को सलाह दी कि विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत प्रस्तावित उपस्करें खरीदने की प्रक्रिया को त्वरित करें ।
- उच्च प्रभाव कारक मूल्य वाले अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में शोध पत्र प्रकाशित करने का सुझाव दिया ।
- उन्होंने वैज्ञानिकों को चालू परियोजनाओं के अंतर्गत प्रभावी तौर पर बजट का उपयोग करने की सलाह दी ।
- सलाह दी कि संस्थान शहतूत के फसल सूचकांक (पत्ती-प्ररोह अनुपात) के लिए बेंच मार्क निर्धारित करने संबंधी परियोजनाओं का प्रस्ताव करें ।

डॉ.के.बी.चंद्रशेखर के धन्यवाद जापन के साथ बैठक समाप्त हुई ।

ह/-

अध्यक्ष

अनुसंधान सलाहकार समिति,केंरेअप्रसं, मैसूरु

K. S. S. S. S.
12/6/24
निदेशक / DIRECTOR
केंद्र ग्राम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
Central Sericultural Research & Training Institute
मानदवादी रोड, श्रीरामपुरा, मसूरु-570 008
MANANDAVADI ROAD SRIRAMPURA, MYSURU-570 008